Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 1, Issue 1 - 2018

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के किशोर छात्र/छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन

शालू तिवारी*

प्रस्तावना

आज मानव जहाँ भौतिक/ तकनीकी विकास के नित ये प्रतिमान स्थापित करता हुआ निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है, वहीं दूसरी तरफ व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों ही स्तरों पर वह असंतोष, घुटन का अनुभव भी कर रहा है। व्यक्ति दिन प्रतिदिन तनावग्रस्त होता जा रहा है। समाज भी इसके दुष्प्रभाव से अछुता नहीं है।

अतिशय भौतिकवादिता ने हमारे जीवन दर्शन की दिशा ही परिवर्तित कर दी है। मानवीय मूल्यों के निरन्तर अवमूल्यन जारी है। अब प्रश्न उठता है कि–मानवीय मूल्यों का ह्रास किस प्रकार रोका जाय तथा सर्वश्रेष्ठ प्राणी (मनुष्य) की श्रेष्ठता कैसे न सिर्फ कायम रखी जाय वरन् उसे किस प्रकार उत्तरोत्तर श्रेष्ठतम् बनाया जाय। इसका सर्वाधिक सशक्त साधन है– "शिक्षा"।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, "शिक्षा वही है जिससे चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होता है। इस अर्थ में लिखने पढ़ने का ज्ञान देने के साथ ही शिक्षा व्यक्ति के आचरण विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानवता के लिए लाभदायक होती है।"[1]

एक व्यक्ति की प्राथमिक पाठशाला उसका अपना परिवार होता है और परिवार का एक अंग है जहाँ हमें सबसे पहले शिक्षा मिलती है। परिवार और समाज के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों तथा विशेषताओं का विकास होता हैं आज हमारे समाज का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है, ये भी सही है कि परिवर्तन इस संसार का नियम है लेकिन जिस तरह से हमारे समाज में मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, वो सही नहीं है।

फ्रोबेल एवं पेस्टालॉजी के अनुसार, *"मातायें, बालकों की आदर्श गुरु होती हैं और परिवार द्वारा प्राप्त शिक्षा स्वाभाविक एवं प्रभावशाली होती है, घर एक शिक्षा संस्था है, और माता सच्ची शिक्षा का श्रोत है।"*[2]

बालक माँ की गोद में आता है, उसकी शिक्षा का भार पर होता है, अतः माँ बालक की प्रथम शिक्षिका है, वह जान बूझकर या अनजाने में बालक को बहुत सी बातों का ज्ञान कराती है, माँ के पश्चात्, परिवार के अन्य सदस्यों, बड़े भाई, बहिनों एवं पिता के आचार–विचार, व्यवहार से बालक बहुत कुछ सीखता है, और प्रभावित होता है।

[1]डॉ0 प्रेम नारायण सिंह, मूल्य चिन्तन, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों पर सार्थक संवाद के लिए अर्द्धवार्षिक पत्रिका, वर्ष 4, अंक–7, जनवरी 2009.
[2]पाण्डेय, रामशकल (2014). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।

*शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र), शिक्षक–शिक्षा संकाय, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

परिवार के स्नेहपूर्ण वातावरण से प्रभावित होते हुए वह अपने परिवार की भाषा, सांस्कृतिक वेश–भूषा, आचार–विचार, आहार–विचार तथा रुचियों का स्वाभाविक रूप से ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार पारिवारिक शिक्षा बालक के व्यक्तित्व की ऐसी आधारशिला बन जाती है जिसमें वह जीवन–पर्यन्त कभी नहीं भूलता। चूँकि प्रत्येक परिवार के प्रभाव अलग–अलग होते हैं, इसलिए एक बालक दूसरे बालकों से विभिन्न होता है। **रेमण्ड** ने ठीक ही लिखा है– *"दो बालक एक ही स्कूल में भले ही पढ़ते हो, एक से ही शिक्षकों से प्रभावित होते हों, एक साथ अध्ययन करते हों, फिर भी सामान्य ज्ञान, रुचियों, भाषा व्यवहार तथा नैतिकता ने अपने–अपने अलग–अलग पारिवारिक वातावरण के कारण, जहाँ से आते है पूर्णतया भिन्न होते है।"*

शिक्षा जगत में परिवार अनौपचारिक साधन के रूप में प्राथमिक पाठशाला का स्थान उसी समय से ग्रहण करता चला आ रहा है, जब से संसार में मानव जीवन के अस्तित्व की कल्पना की जा सकती है। बालक की शिक्षा की श्रीगणेश परिवार में ही होता है। परिवार में माता अपने बालक की शिक्षा का प्रथम स्त्रोत होती है। माता रूपी गुरु के द्वारा प्रेमपूर्वक प्राप्त की हुई शिक्षा को बालक कभी नहीं भूलता। उसके व्यक्तित्व पर इसी शिक्षा की अमिट छाप लग जाती है। यही कारण है कि विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने बालक की शिक्षा में परिवार की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए उसके महत्त्व का अनेक प्रकार गुणगान किया है।

प्रस्तुत अध्ययन में हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन किया गया है। कुछ शोधों से इंगित होता है कि पारिवारिक वातावरण का बच्चों के शैक्षिक कार्यों पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ताज (1999). ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि माता–पिता तथा बालकों के मध्य अर्न्तसम्बन्धों का शैक्षिक निष्पत्ति पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इलिगविलियि और अकोडा (2001) ने ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि पिता की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति का विद्यार्थियों की गणित तथा अंग्रेजी भाषा की निष्पत्ति पर प्रभावी अंतर पड़ता है। बॉरवरा (2001) ने ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि साक्षर माता–पिताओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च रहती है। तथा यह भी तथ्य प्राप्त किया गया कि अशिक्षित माता–पिता अपने व्यस्त कार्यक्रमों के कारण अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरुक नहीं हैं। अनोला और नुरमी (2004) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि माताओं का अपने बच्चों पर सख्त उनके गणित विषय में निष्पत्ति को कम कर देता है। हारग्रोव, इंमान तथा क्रेन (2005) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि पारिवारिक सम्बन्ध (उस अंश तक, कि जिस सीमा तक परिवार के सदस्य अपनी भावनाओं और समस्याओं को व्यक्त करने क लिए प्रोत्साहित किये जाते हैं) किशोरों के कैरियर निर्धारण तथा उसकी योजना बनाने में सूक्ष्म किंतु शक्तिशाली भूमिका अदा करते हैं। केन, पामेला ई. डेविस (2005) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि अभिभावक के शैक्षणिक क्षमता का बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धा पाया गया जबकि अप्रत्यक्ष रूप से अभिभावक से उम्मीद एवं अभिभावक व्यवहार का भी प्रभाव पाया गया। अरडन, सोलेक और स्कोइनफेल्डर (2007) ने सांस्कृतिक कारकों पीढ़ीगत स्तर, मूल देश के अनुसार परिवार के प्रभाव का अभिप्रेरणा स्तर तथा उपलब्धि स्तर पर भिन्न प्रभाव पड़ता है। दौलता, मीना (2008) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि विद्यार्थियों के अच्छे पारिवारिक वातावरण का उनके

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

विद्यालयी उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। सिंह, कुँवर आनन्द (2008). ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि छात्रों के गणित विषय की निष्पत्ति पर उनके ''घर के वातावरण तथा आयोजन'' एवं ''एकाग्रता की आदत'' का प्रभाव पड़ता है। सिंह, सजीव (2008). ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि पिताओं द्वारा उच्च एवं निम्न एकाग्रता पारिवारिक सम्बन्धों की छात्राओं की बुद्धि में अन्तर है तथा अच्छे पारिवारिक (स्वीकृति) सम्बन्ध किशोरों के मानसिक विकास में प्रभावी भूमिका निभाते हैं। सिंह, नीलम (2013). ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि उच्च पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों की बुद्धिलब्धि निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों की बुद्धिलब्धि से अधिक होती है। एगुनसोला (2014) ने ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कृषि विज्ञान के विद्यार्थियों के अभिभावकों के शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय एवं गृह–स्थिति का उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। कुमार एवं लता (2014) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि किशोरों के उच्च अनुभव एवं स्वस्थ पारिवारिक वातावरण के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पारिवारिक वातावरण की अपेक्षा उच्च पाया गया। युनुस एवं बाबा (2014) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि विद्यालयी वातावरण एवं पारिवारिक वातावरणका विद्यार्थियों के खराब शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है। आर.ई. ईला (2015) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि सरकारी माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के परिवार आकार का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। कमुती, मुसीली, जेरोमे (2015) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि अभिभावक के आर्थिक स्थिति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। जिस बच्चे की फीस एवं अधिक सामग्री सही समय पर उपलब्ध कराई जाती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।

अत: अन्य शोधों के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के जीवन में पारिवारिक वातावरण का विशेष महत्त्व है जहाँ उच्च पारिवारिक वातावरण होती है तो वहाँ छात्र–छात्राओं के शारीरिक, मानसिक के साथ–साथ उनके शैक्षिक पर सार्थक एवं धनात्मक प्रभाव पड़ता है वहीं दूसरी ओर जहाँ पारिवारिक वातावरण निम्न या मध्यम पायी जाती है तो वहीं छात्र/छात्राओं के बुद्धिलब्धि, रूचि, शैक्षिक अभिप्रेरणा, मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक उपलब्धि मध्यम एवं निम्न पाया जाना स्वाभाविक है।

समस्या कथन

''माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के किशोर छात्र/छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन''।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण की विमा अवरोधन बनाम स्वतंत्रता, आसक्ति बनाम टालना, पक्षपात बनाम निष्पक्षता, ध्यान देना बनाम लापरवाही, स्वीकृति बनाम अस्वीकृति, गर्मजोशी बनाम ठण्डे दिमाग से अस्वीकृति, भरोसा बनाम शक, प्रभुत्व बनाम विनम्रता, अपेक्षा बनाम निराशा एवं खुली बातचीत बनाम नियंत्रित बातचीत का तुलनात्मक अध्ययन करना।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना निम्नवत है–

1. हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण में कोई अन्तर नहीं है।
2. हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण की विमा अवरोधन बनाम स्वतंत्रता, आसक्ति बनाम टालना, पक्षपात बनाम निष्पक्षता, ध्यान देना बनाम लापरवाही, स्वीकृति बनाम अस्वीकृति, गर्मजोशी बनाम ठण्डे दिमाग से अस्वीकृति, भरोसा बनाम शक, प्रभुत्व बनाम विनम्रता, अपेक्षा बनाम निराशा एवं खुली बातचीत बनाम नियंत्रित बातचीत में कोई अन्तर नहीं है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शैक्षिक शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

इलाहाबाद जनपद के हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के सभी छात्र–छात्राओं को प्रस्तुत लघुशोध के परिणामों के सामान्यीकरण हेतु जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

इलाहाबाद जनपद में संचालित यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक स्तर के चार विद्यालयों का आकस्मिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया है। पुनः प्रत्येक विद्यालय से 25–25 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें इस प्रकार कुल 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है।

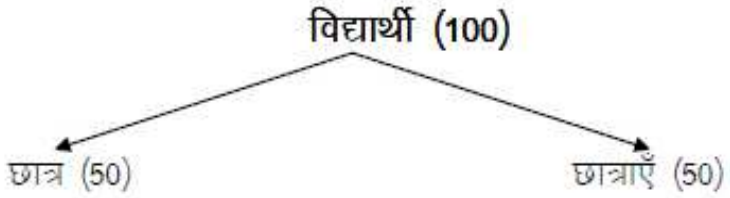

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण को मापने के लिए डॉ0 बीना शाह (प्रोफेसर एवं हेड), इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांसड् स्टडीज इन एजूकेशन, एम.जे.पी. रूलेहखण्ड यूनिवर्सिटी, बरेली द्वारा निर्मित 'फैमिली क्लाइमेट स्केल' का प्रयोग किया गया है। इन प्रश्न के माध्यम से माता–पिता के व्यवहार के तीन भागों के उत्तरों में विद्यार्थियों से पाया जा सकता है। जो निम्नांकित है–

1. सदैव
2. कभी–कभी
3. कभी नहीं

प्रश्नावली में दिये गये प्रश्न/कथन निम्न दस बिन्दुओं पर आधारित है–अवरोध बनाम स्वतंत्रता, आसक्ति बनाम टालना, पक्षपात बनाम निष्पक्षता, ध्यान देना बनाम लापरवाही, स्वीकृति बनाम अस्वीकृति, गर्मजोशी बनाम ठंडे दिमाग से अस्वीकृति, भरोसा बनाम शक, प्रभुत्व बनाम विनम्रता, अपेक्षा बनाम निराशा, खुली बातचीत बनाम नियंत्रित बातचीत।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत लघुशोध में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

उद्देश्य–1 हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों के अन्तर्गत पारिवारिक वातावरण की 10 विमाओं अवरोध बनाम स्वतंत्रता, आसक्ति बनाम टालना, पक्षपात बनाम निष्पक्षता, ध्यान देना बनाम लापरवाही, स्वीकृति बनाम अस्वीकृति, गर्मजोशी बनाम ठंडे दिमाग से अस्वीकृति, भरोसा बनाम शक, प्रभुत्व बनाम विनम्रता, अपेक्षा बनाम निराशा, खुली बातचीत बनाम नियंत्रित बातचीत का अलग–अलग हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

तालिका 1.हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण की विमा का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

पारिवारिक वातावरण की विमा	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (S_{ED})	क्रान्तिक अनुपात (C.R. Value)
अवरोध बनाम स्वतंत्रता	छात्र	50	13.86	1.74	1.26	0.40	3.12*
	छात्राएँ	50	12.60	2.27			
आसक्ति बनाम टालना	छात्र	50	14.08	2.17	2.12	0.52	4.07*
	छात्राएँ	50	11.96	2.97			
पक्षपात बनाम निष्पक्षता	छात्र	50	14.34	1.86	2.12	0.41	5.13*
	छात्राएँ	50	12.22	2.27			
ध्यान देना बनाम लापरवाही	छात्र	50	13.7	1.89	1.24	0.39	3.14*
	छात्राएँ	50	12.46	2.05			
स्वीकृति बनाम अस्वीकृति	छात्र	50	12.98	2.08	1.72	0.43	4.03*
	छात्राएँ	50	11.26	2.19			
गर्मजोशी बनाम ठंडे दिमाग से अस्वीकृति	छात्र	50	13.32	2.27	2.04	0.49	4.13*
	छात्राएँ	50	11.28	2.65			
भरोसा बनाम शक	छात्र	50	13.38	1.77	1.70	0.41	4.11*
	छात्राएँ	50	11.68	2.33			
प्रभुत्व बनाम विनम्रता	छात्र	50	13.7	2.23	1.84	0.49	3.75*
	छात्राएँ	50	11.86	2.66			
अपेक्षा बनाम निराशा	छात्र	50	14.72	1.99	2.68	0.42	6.42*
	छात्राएँ	50	12.04	2.18			
खुली बातचीत बनाम नियंत्रित बातचीत	छात्र	50	13.06	2.56	2.56	0.52	4.88*
	छात्राएँ	50	10.50	2.68			
पारिवारिक वातावरण	छात्र	50	137.14	8.93	19.28	2.24	8.59*
	छात्राएँ	50	117.86	13.13			

df= 98 पर *0-05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

सारणी से ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण की 10 विमाओं अवरोध बनाम स्वतंत्रता, आसक्ति बनाम टालना, पक्षपात बनाम निष्पक्षता, ध्यान देना बनाम लापरवाही, स्वीकृति बनाम अस्वीकृति, गर्मजोशी बनाम ठंडे दिमाग से अस्वीकृति, भरोसा बनाम शक, प्रभुत्व बनाम विनम्रता, अपेक्षा बनाम निराशा, खुली बातचीत बनाम नियंत्रित बातचीत के मध्य टी–अनुपात का मान 3.12, 4.07, 5.13, 3.14, 4.03, 4.13, 4.11, 3.75, 6.42, 4.88 एवं 8.59 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण की 10 विमाओं अवरोध बनाम स्वतंत्रता, आसक्ति बनाम टालना, पक्षपात बनाम निष्पक्षता, ध्यान देना बनाम लापरवाही, स्वीकृति बनाम अस्वीकृति, गर्मजोशी बनाम ठंडे दिमाग से अस्वीकृति, भरोसा बनाम शक, प्रभुत्व बनाम विनम्रता, अपेक्षा बनाम निराशा, खुली बातचीत बनाम नियंत्रित बातचीत के मध्य सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण की 10 विमाओं अवरोध बनाम स्वतंत्रता, आसक्ति बनाम टालना, पक्षपात बनाम निष्पक्षता, ध्यान देना बनाम लापरवाही, स्वीकृति बनाम अस्वीकृति, गर्मजोशी बनाम ठंडे दिमाग से अस्वीकृति, भरोसा बनाम शक, प्रभुत्व बनाम विनम्रता, अपेक्षा बनाम निराशा, खुली बातचीत बनाम नियंत्रित बातचीत के मध्य सार्थक अन्तर है।

अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्रों के पारिवारिक वातावरण में उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता है जबकि छात्राओं के प्रति पारिवारिक वातावरण में कम ध्यान देना, नियंत्रण, प्रभुत्व, शक, अस्वीकृति तथा उनके प्रति लगाव कम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. आर.ई. ईला (2015). इन्फ्लुऐन्स ऑफ फैमिली साइस एण्ड फैमिली टाइप ऑफ ऐकेडमी परफार्मेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स इन गवर्मेन्ट इन कालाबार म्युनिस्पिलिटी, क्रास रिवर स्टेट, नाइजीरिया, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्युमिनिट्स सोशल साइंसेस एण्ड एजुकेशन, वाल्यूम–2, इश्यू–11, www.arcjournals.org.

[2]. आर0 विवियन मूडी (2004). अफ्रीकी अमेरिकन विद्यार्थियों की सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति तथा गणित विषय में सफलता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन; जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, V-97, n36, p-135.

[3]. ओ0एम0 इलिगविलियि और बी0ए0 अकोडा (2001). जर्नल ऑफ सोशल साइन्स, 5(1) पेज 11–20।

[4]. उपाध्याय, प्रतिभा (2005). *भारतीय शिक्षा की उदीयमान प्रवृत्तियां*, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

[5]. एगुनसोना, ए.ओ.ई. (2014). इन्फ्लुऐन्स होम इन्वायर्मेन्ट ऑफ ऐकेडमिक एचिवमेन्ट परफार्मेन्स ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन एग्रीकल्चर साइंस इन अदमवा स्टेट नाइजीरिया, आई.ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड मेथेड इन एजुकेशन, वाल्यूम–14, इश्यू–4, वर्जन–II, पृ0 46–53

[6]. एनगुर, बेगुम (2017). पैरेन्ट्स विथ् साइकोसिसः इम्पैक्ट ऑफ पैरेन्टिंग

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

एण्ड पैरेन्ट–चाइल्ड रिलेशनशिप. जर्नल ऑफ चाइल्ड एण्ड एडोल्वसेन्ट बिहैवियर. वाल्यूम–5, इश्शू 1, पृ0 1–4.

[7]. एस0जे0 थीमन, के0डी0 मान्येकी तथ एम0 थान्गोनी: ''साउथ अफ्रीका के ग्रामीण छात्रों के स्वास्थ्य (पोषण). एवं शैक्षिक निष्पत्ति (गणित तथा अंग्रेजी) के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन,'' इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशनल डेवलपमेंट, वाल्यूम–23, नं0 6, पृ0 637–643।

[8]. काइसा अगेला और जारी नुरमी (2004). 'माता–पिता के लगाव का उनके बच्चों की गणित विषय की शैक्षिक निष्पत्ति पर मनोवैज्ञानिक नियंत्रण का प्रभाव; डेवलपमेंट ऑफ साइकोलॉजी, V-40, n-6, p 965-978.

[9]. कमुती, मुसीली, जेरोमे (2015). इन्फ्लुऐन्स ऑफ होम इन्वायर्मेन्ट ऑन ऐकेडमी परफार्मेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स इन पब्लिक सेकेण्डरी स्कूल्स इन केटुई वेस्ट सब कन्ट्री केटुई कन्ट्री केन्या, साउथ इर्स्टन केन्या यूनिवर्सिटी।

[10]. के0 वाइरोन हरग्रोव, जी0 अपरना इंमान तथा एल0 रैंडी क्रेन (2005). 'पारिवारिक संबन्धों का किशोरों के कैरियर निर्धारिण तथा भविष्य की योजना बनाने में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन,' जर्नल ऑफ कैरियर डेवलपमेंट, V-31, n-4, p 263-178, June 2005.

[11]. केन, पामेला ई. डेविस (2005). द इन्फ्लूएन्स ऑफ पैरेन्ट एजूकेशन एण्ड फैमिली इन्कम ऑन चाइल्ड एचिवमेन्ट: द इन्डाइरेक्ट रोल ऑफ पैरेन्टल एक्सपेटेशन्स एण्ड द होम इन्वायर्मेन्ट, जर्नल ऑफ फैमिली साइकोलॉजी, द अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, वाल्यूम –19, नं0 2, पृ0 294–304.

[12]. गुप्ता, सुबोध एवं बाला, ज्ञान (2008). ''कैरियर एण्ड फैमिली वैल्यूज ऑफ ग्रेजुएट गर्ल्स : ए स्टडी'', द जनरल ऑफ एजुकेशन, अंक 4(2). पृ0 39–41.

[13]. टिम अरडन, मोनिका सोलेक तथा इरिन स्कॉइनफेल्डर (2007). 'छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति पर परिवार द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन', यूरोपियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी ऑफ एजूकेशन, वाल्यूम–22, नं0 1, पृ0 21.

[14]. दौलता, रानी (2008). इम्पैक्ट ऑफ होम इन्वायर्मेन्ट ऑन द स्कूलिस्टिक एचिवमेन्ट ऑफ चिल्ड्रेन, जे. हुम. इकोल., 23(1). पृ0 75–77.

[15]. युनुस, शफा ए. एवं बाबा, सैमुएल, लराबा (2014). इफेक्ट ऑफ फैमिली इन्वायर्मेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स ऐकेडमी परफार्मेन्स एण्ड एडजेस्टमेन्ट प्रॉब्लम इन स्कूल, जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड प्रैक्टिस, वाल्यूम–5, इश्शू–19, पृ0 96–101, www.iiste.org.

[16]. शुक्ल, पवन कुमार (2009). ''ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में उपलब्ध सुविधाओं के सन्दर्भ में किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों, अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन, शिक्षा संकाय, रा.ह.सिंह. पी.जी. कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर।

[17]. सिंह, कुँवर आनन्द (2008). ने कक्षा 11 के छात्रों के गणित विषय की निष्पत्ति पर अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

[18]. सिंह, सजीव (2008). +2 स्तर पर छात्रों की बुद्धि एवं समायोजन पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

[19]. सिंह, नीलम (2013). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके बुद्धिलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबाद: नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

[20]. सिंह, जागृति एवं अन्य (2017). पैरेन्टिंग एण्ड फैमिली एडजेस्टमेन्ट एमंग पैरेन्ट्स ऑफ चिल्ड्रेन एण्ड एडोल्वसेन्ट्स विथ् इन्टलेक्चुएल डिसएबिल्टी एण्ड फंक्शनल साइकोसिस: ए कर्म्पेटिव स्टडी. इण्डिया जर्नल ऑफ साइकिर्टीक सोशल वर्क, 8(1), पृ0 14–20.

[21]. सीमा एवं सिम्पलजीत (2017). रिलेशनशिप ऑफ पैरेन्टल बर्नआउट विथ् पैरेन्टल स्ट्रेस एण्ड पर्सनालिटी एमंग पैरेन्ट्स ऑफ नियोनेट्स विथ् हाइपरबिलरूबिनिमिया. द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डियन साइकोलॉजी. वाल्यूम–4, इश्यू–2, नृ0 92, पृ0 102–111.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.